हर्षवर्धन के पश्चात भारत की राजनैतिक व्यवस्था अस्थिरता, बिखराव और छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्यों में विभाजित हो गई। 7वीं शताब्दी में हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद उत्तरी भारत में एक केंद्रीय सत्ता का अभाव हो गया। हर्ष के शासनकाल में उत्तरी भारत में एक हद तक राजनीतिक एकता थी, लेकिन उनके पश्चात भारत में एक सशक्त साम्राज्य का अभाव महसूस होने लगा। इस काल की राजनीतिक व्यवस्था पर मुख्यत: निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से प्रकाश डाला जा सकता है:

1. क्षेत्रीय राजवंशों का उदय

हर्षवर्धन के पश्चात भारत में कई क्षेत्रीय राजवंश उभरने लगे। ये क्षेत्रीय राजवंश शक्तिशाली होकर अपने-अपने क्षेत्रों में स्वतंत्रता का दावा करने लगे। इनमें प्रमुख थे:

गुर्जर-प्रतिहार वंश (राजस्थान और गुजरात)

पाला वंश (बंगाल और बिहार)

राष्ट्रकूट वंश (दक्षिण-पश्चिम भारत)

चालुक्य वंश (कर्नाटक)

चोल वंश (तमिलनाडु)

इन राजवंशों के बीच सत्ता, भूमि और व्यापार मार्गों के लिए संघर्ष चलता रहा। इनके बीच लगातार युद्ध होते रहे, जिससे भारत में राजनीतिक अस्थिरता बनी रही।

2. त्रिपक्षीय संघर्ष

हर्षवर्धन के पश्चात उत्तर भारत में तीन प्रमुख शक्तियाँ उभरीं - गुर्जर-प्रतिहार, पाला, और राष्ट्रकूट। इन तीनों के बीच कन्नौज (उत्तर प्रदेश) पर अधिकार के लिए लगभग 200 वर्षों तक त्रिपक्षीय संघर्ष चलता रहा। कन्नौज को अपने भौगोलिक और सांस्कृतिक महत्व के कारण एक महत्वपूर्ण स्थान माना जाता था। इस संघर्ष ने उत्तर भारत में एक स्थायी शांति की स्थापना को कठिन बना दिया।

3. क्षेत्रीय स्वतंत्रता और सामंतवाद का विस्तार

हर्षवर्धन के पश्चात सामंतवादी व्यवस्था का विस्तार हुआ, जिसमें राजा अपने अधीनस्थ सामंतों को अपने क्षेत्र पर शासन करने का अधिकार दे देते थे। ये सामंत कालांतर में स्वतंत्रता की ओर अग्रसर होने लगे। इससे क्षेत्रीय शासक अपने क्षेत्रों में अधिक शक्ति प्राप्त करने लगे और केंद्रीय सत्ता कमजोर होती गई। सामंतों के साथ इस तरह का अनुबंध सामंतवादी व्यवस्था का एक मुख्य लक्षण था।

4. अरब आक्रमण और सिंध पर नियंत्रण

8वीं शताब्दी में अरबों ने भारत पर आक्रमण किया और सिंध पर विजय प्राप्त की। इस आक्रमण के कारण भारत के पश्चिमी सीमाओं पर एक नया खतरा उत्पन्न हुआ और भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लामी संस्कृति का प्रवेश हुआ। हालाँकि अरब आक्रमण के बाद भारतीय शासक अपनी सीमाओं की रक्षा में सफल रहे, लेकिन इससे भारतीय उपमहाद्वीप की राजनीति पर प्रभाव पड़ा।

5. बौद्ध धर्म का पतन और हिंदू धर्म का पुनरुत्थान

हर्षवर्धन के काल तक बौद्ध धर्म को शासक वर्ग से समर्थन मिला था। उनके पश्चात, हिंदू धर्म का पुनरुत्थान होने लगा और कई क्षेत्रीय शासक हिंदू मंदिरों और मठों के संरक्षणकर्ता बन गए। इस पुनरुत्थान ने धार्मिक संस्थानों की शक्ति को बढ़ावा दिया और यह धर्म संस्कृति पर आधारित राजनीति को जन्म देने लगा।

6. राजपूत राज्यों का उदय

हर्षवर्धन के पश्चात उत्तरी और पश्चिमी भारत में राजपूत राज्यों का उदय हुआ। ये राजपूत शासक अपने-अपने क्षेत्रों में स्वतंत्र हो गए और अपने को क्षत्रिय योद्धा के रूप में मान्यता देने लगे। इनमें से कई राज्यों ने अपनी संस्कृति, रीति-रिवाज और परंपराओं को संरक्षित किया और भारत की संस्कृति और इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

7. दक्षिण भारत की राजनीति

हर्षवर्धन के पश्चात दक्षिण भारत में भी कई क्षेत्रीय राजवंश उभरने लगे, जिनमें चालुक्य, राष्ट्रकूट, और चोल प्रमुख थे। ये शक्तिशाली राजवंश अपनी-अपनी सीमाओं का विस्तार करने में लगे रहे। विशेषकर चोल साम्राज्य ने न केवल दक्षिण भारत बल्कि श्रीलंका और दक्षिण-पूर्व एशिया के क्षेत्रों में भी अपना प्रभुत्व स्थापित किया।

8. व्यापार और अर्थव्यवस्था

इस काल में व्यापार और अर्थव्यवस्था का स्थानीय स्तर पर विस्तार हुआ। क्षेत्रीय शासकों ने व्यापार को बढ़ावा देने के लिए बंदरगाहों और व्यापारिक मार्गों का विकास किया। दक्षिण भारत में चोलों ने समुद्री व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित किए।

निष्कर्ष

हर्षवर्धन के पश्चात भारत में एक केंद्रीय सत्ता का अभाव था और कई क्षेत्रीय शक्तियाँ उभर कर सामने आईं। यह काल छोटे-छोटे राज्यों, राजवंशों और सामंतवादी व्यवस्था का था। इन क्षेत्रीय शक्तियों के बीच लगातार संघर्ष और राजनीतिक बिखराव की स्थिति बनी रही, जिसके कारण एक संगठित और स्थायी साम्राज्य की स्थापना संभव नहीं हो पाई।